रात्रि क्लास 12/7/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ईश्वरीय सर्विस में मजा बहुत है; क्योंकि ईश्वर आते हैं आकर पढ़ाते हैं। यह कोई जानते नहीं हैं। तुम बच्चों को अचानक लॉटरी मिली है। इसलिए इसको पहले2 समझ नहीं सकते हैं। फिर धीरे2 समझते हैं बड़ी भारी लॉटरी है। दिल होती है ऐसी लॉटरी अनेकों को मिले। इसमें खुशी रहती है। ऐसे सर्विस कोई कर नहीं सकते। बच्चों को सर्विस में खुशी रहती है; क्योंकि पद्म भाग्य खुल जाता है। जितना2 सर्विस करेंगे उतना नर वा नारियों को वा अपने बहन–भाइयों को सुख पहुँचाना होता है। इतना सुख पहुँचाने वाले तुम ब्राह्मणों के सिवाय और कोई नहीं होता। नशा चढ़ता है जितना हम औरों का कल्याण करते हैं उतना अपना करते हैं। जितना सर्विस करेंगे भाइयों की अथवा नर–नारियों की उतना इजाफा जमा होता जाता है। बाप भी खुश होते हैं कितना अच्छा मददगार बनते हैं। कितनी ऊँच तकदीर बनाते हैं। सो तो बाप के सिवाय कोई बना न सके। तुम बच्चे जानते हो बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। यह तो समझते हो जितना पढ़ेंगे, लिखेंगे होंगे नवाब..... फिर भी राजा महाराजा बनना अच्छी तकदीर है। नम्बरवार प्रजा बनना अच्छी तकदीर नहीं है। बाप कहते हैं जब मुझे छोड़ते हो वा फारकती देते हो तो जाकर चण्डाल का जन्म लेंगे। और क्या। बच्चे अनुभव भी सुनाते हैं खुशी से। यह तो बच्चे समझते हैं बाप भगवान स्वर्ग का रचयिता है तो स्वर्ग की बादशाही देंगे। कॉमन बात है तुम बच्चों के लिए। जैसे लौकिक बाप से वरसा लेना कॉमन बात है बच्चों के लिए। तुम कल्प2 लौकिक बाप से भी वरसा लेते आये हो। बेहद के बाप से भी कल्प2 तुम ही लेते हो। यह कॉमन बात है। भक्ति मार्ग में आमदनी कुछ नहीं रहती। चाहते हैं श्रीकृष्ण की पुरी में जावें। कैसे जावें वह तो समझ नहीं सकते। तुम जानते हो इसलिए पुरुषार्थ करते हो। सर्विस हो तो यह हो। बहुत ऐसे चाहते हैं बन्धन न हो तो हम यहाँ ही बैठ जावें। सन्यासी बन्धन तोड़कर गुम हो जाते हैं। वैराग्य हो जाता है। यहाँ तो भागने की बात नहीं। दुख से वा कोई बात से भागना कमजोरी है। तुम बच्चे जानते हो भल मर्तबे वाले कितने भी हैं; परन्तु उन्हों को तो कुछ मिलने का नहीं है। तुम जितना जास्ती पुरुषार्थ करेंगे उतना बहुत सुख मिलेगा। जो अच्छे समझू सयाने हैं घर में रहते भी पुरुषार्थ करते हैं। बाप समझाते रहते हैं सभी तो नहीं यहाँ आकर रहेंगे। जैसे और आश्रम हैं। तुम बच्चे जानते हो हम बेहद के बाप के पास आये हैं। पूरा पुरुषार्थ कर बेहद के बाप का वरसा लेवें, विजयमाला का दाना बनें। वह भी ऊँच नम्बर में। जिन्हों की माला सिमरी जाती है। आठ रत्न गाये जाते हैं। मंदिर में भी 9 रत्न के बनाते हैं। उन्हों को लक्की समझते हैं। वही लक्की थे। बाकी वह मंडी पहनने से लक्की नहीं बनेंगे। विश्व के मालिक बनने वाले ही लक्की ठहरे। बाकी वह पहनने से क्या फायदा। यह निशानी किन्हों की है यह कोई जानते नहीं। यह तो करके जन्म–पत्री वालों ने सुनाया है। अभी तुम इतने लक्की बनते हो जो तुमको वहाँ जन्म पत्री आदि दिखलाने की नहीं रहती। तुम पर बृहस्पत की दशा बैठ जाती है। वहाँ जन्म–पत्री देखने दिखाने की जरूरत ही नहीं। वहाँ यह सभी बातें कुछ भी नहीं होती। तुम संगमयुगी बच्चे जो हो तुम्हारी चलन बिल्कुल न्यारी। भल पुरुषार्थ करते हो। बहुत बच्चे हैं जिनमें दैवीगुण कम हैं; क्योंकि योगबल नहीं है। योगबल हो तो यह पुरानी दुनिया एकदम भूल जाये। तुम बच्चों को बाप की भी याद आवे। तो शान्तिधाम–सुखधाम की भी याद आवे। अच्छी चीज़ याद पड़ती है ना। ऊँच ते ऊँच है बाप फिर ऊँच ते ऊँच वरसा मिलता है। और सभी भुला देना चाहिए; क्योंकि इन सभी से दुख मिला है। सभी सम्बन्धियों आदि से दुख ही मिला है। इसलिए कहते हैं यह सभी कुछ एक ही है। जो सुख और कोई दे नहीं सकता। सच्चा स्थाई सुख एक बाप ही देते हैं। समझते हैं औरों को भी सुख मिले। खुद सुख में हैं तो औरों को भी देते हैं। जैसे सोशल वर्कर्स होते हैं, जितना सर्विस करते हैं, वह तो अल्पकाल के लिए। बेहद का बाप कितनी अच्छी राय देते हैं। उन्हों को यह पता नहीं है कि ईश्वरीय सर्विस होती है जिससे 21 जन्म लिए सभी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती है। खुद अपनी धारणा कर सोसाइटी की सर्विस करनी है। टाइम तो बहुत है। तुम बच्चों पास जो भी टाइम मिले तो इसमें लगाना चाहिए।

8घंटा तो मिलती है। जैसे गवर्मेन्ट की आठ घंटा सर्विस करने बांधे हुए हैं। यह सेवा भी ऐसी है जितना हो सके आठ के बदली नव(नौ), 10 घंटे सारी हयाती ही इस सर्विस में लगा दें। इनको ही पुरुषार्थ कहा जाता। ऊँच पद भी पाते हो। प्रजा कोई कम नहीं बनती। बहुत बनती है। तुम हो अननोन..... तुम क्या कर रहे हो कोई समझ नहीं सकते। तुम अपनी राजाई स्थापन कर रहे हो। समझते हो हम विश्व के मालिक बनते हैं तो औरों को भी आप समान बनावें। ब्राह्मणियाँ कोशिश करती हैं जो यह भी विश्व का मालिक बने। फिर जितना जो पढ़ेंगे एमऑबजेक्ट तो यह है फिर जितना चाहे उतना पुरुषार्थ करे। दिखाया भी है फॉलो फादर–मदर। फादर–मदर कौन है? (शिवबाबा) शिवबाबा पुरुषार्थी है? (आदि देवी और आदी देव – मम्मा, बाबा) आदि देवी और कोई है? यह(बाबा) नहीं है? त्वमेव माताश्च पिता..... परमपिता वह है। प्रजापिता ब्रह्मा को परमपिता नहीं कहा जाता। यह प्रजापिता है। मम्मा भी है। शिवबाबा इन द्वारा तुमको एडॉप्ट करते हैं। यह दोनों है। इनको कहा जाता है माता–पिता। वह है परमपिता। फिर एडॉप्ट करते हैं तुम मेरी बदली काम सम्भालो। औरों का कल्याण भी करना है। कल्याण न करेंगे तो ऊँच पद नहीं पावेंगे। बाबा सभी से जास्ती म्युज़ियम पसन्द करते हैं। स्थाई कहेंगे। हाल देखना है तो चलो हमारे साथ हम दिखलावें। म्युजियम बड़े2 बनेंगे तो बहुत लोग आवेंगे। स्थाई एक दो को ले आते हैं दिखलाने लिए। बड़े आदमी को बुलाते हैं ओपनिंग शिरोमणी करने। सिर्फ नाम हो। इसलिए बाबा कहते हैं उनको समझाना है हम विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हैं। बोलो क्या चाहते हो। विश्व में शान्ति या और कुछ। भला शान्ति भी किस प्रकार की? कब हुई थी? लाखों वर्ष कहने से भूल जाते हैं। सुख–शान्ति–पवित्रता थी। बाप है गरीब निवाज। भारतवासी भी गरीब हैं। उसमें भी गरीब हैं अहिल्याएँ, कुबजाएँ। साहुकार को फुर्सत नहीं। गरीबों को धन की जरूरत रहती है। तुम किसके पिछाड़ी हैरान हो? ज्ञान रत्न। इसको धन कहा जाता। बाप ने तुमको कितना खजाना दिया। कितना अकीचार धन देते हैं। बाप पूछते हैं मीठे2 बच्चों तुम विश्व के मालिक थे ना। निश्चय है हम अमर लोक में जाकर जन्म लेंगे। ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर को खुशी होती है। जानते हैं हम जाकर यह बनेंगे। बच्चों को भी खुशी रहनी चाहिए। बेगर टू प्रिन्स। सेवा ही सेवा बाप का पैगाम पहुँचाना है। यह पुरानी तमो0 आरफन दुनिया है। कितने लड़ाई–झगड़े होते हैं। बाप आते हैं फिर आरफन कोई हो न सके। उनको कहा जाता है सुखधाम। यह है दुखधाम। यहाँ कुछ मर्तबा होता नहीं। वहाँ अकाले मृत्यु होती नहीं। वहाँ तो सदैव खुशी ही खुशी। सुख ही सुख है। यहाँ तो न चाहते भी अनेक प्रकार के दुख आ जाते हैं। इसको कहा ही जाता है खूनीनाहक खेल। तुम बच्चों को बहुत खुशी होती है बाप के आगे आने में। शिव बाबा ही याद आवेगा। चक्र भी याद आवेगा। उठते–बैठते, चलते–फिरते तुम चक्रवर्ती राजा बन सकते हो। बाबा पास रहने वालों से भी ऊँच पद पा सकते हो। जानी–जाननहार कहते हैं; परन्तु ऐसे नहीं सभी को बैठ जानते हैं। बाप कहते हैं मैं जानता सभी हूँ; परन्तु बताऊँगा अपने समय पर। तुमको बाप के आगे आने में बड़ी खुशी होती है। कहते हैं बैठे रहें; परंतु कितने ऐसे बैठेंगे। बाप कहते हैं घर में रहते भी तुम ऐसी सर्विस करते रहो तो बहुत ऊँच पद पा सकते हो। लौकिक बाप के आगे तो बहुत ही रहे। पारलौकिक बाप जो 5000 वर्ष के बाद मिला है तो क्यों नहीं दिल होगी रहने की। लौकिक बाप की भी परवरिश ली। सभी की परवरिश ली तो अभी क्यों नहीं बेहद के बाप की परवरिश लें। बाप भी बहुत बच्चों को देख खुश होते हैं। बाप बहुत प्यार करते हैं एक एक को। ठीक से सर्विस नहीं करते हो तो उनके ऊपर प्यार जाता नहीं। हरेक अपने दिल से पूछे हम कितनी सर्विस करते हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट और रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।